ISSN : 0975-3664
RNI : U.P.BIL/2012/43696
UGC No. : 41386

शोध - धारा
SHODH DHARA

(A peer reviewed Quarterly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

Year : 2019 Month : September Vol. 3

Chief Editor
Dr. (Smt.) Neelam Mukesh

54

Editor
Dr. Rajesh Chandra Pandey

Published by : Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.

Special
ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696, UGC No. : 41386
SHODH-DHARA ; Sep. 2019; Vol. 3; P. 243-248

गाँधी के धर्म सम्बन्धी विचार

मो० शारिक

स०आ०, शारीरिक शिक्षा विभाग, ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फारसी विश्वविद्यालय, **लखनऊ, उ०प्र०**

(प्राप्त : २४ जून २०१६)

Abstract

सत्य और अहिंसा की प्रतिमूर्ति महात्मा गाँधी ने धर्म की स जनात्मक शक्ति को स्वीकार किया था। धर्म उनके लिए संसार की नैतिक अनुशासन की व्यवस्था थी। उन्होंने समाज में व्याप्त धर्म के विकृत रूप को देखा और अपने प्रयोगों तथा निष्कर्षो के आधार पर धर्म की पुनः एक व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की। गाँधी जी ने धर्म को जीवन और समाज का आधारभूत तत्व स्वीकार किया और कहा कि इसको निकाल देने से व्यक्ति और समाज दोनों निष्प्रांण और शून्य हो जाते हैं। गाँधी के दर्शन में धर्म का अर्थ एक 'सेक्ट' नहीं है, बल्कि यह एक शक्ति है, जो सत्य के आधार पर मानवता के बीच समन्वय स्थापित करती है, परन्तु यह तभी सम्भव है, जब मानव अपने आपको सम्पूर्ण समुदाय का एक हिस्सा माने। गाँधी दर्शन सभी धर्म की बुनियादी एकता पर आधारित है। यह गाँधी का सर्वधर्म समभाव है। 'मानवता' का संरक्षण सभी धर्मो का बुनियादी सिद्धान्त है। सभी धर्म यह उपदेश देते हैं कि सब इंसान भाई–भाई हैं। सभी धर्मो ने क्षमा को अपने बुनियादी सिद्धान्तों में सबसे बड़ा दर्जा दिया है। गाँधी जी ने जहाँ एक ओर हिन्दू धर्मग्रन्थों, वेदों, उपनिषदों, पुराणों और गीता आदि का अध्ययन किया वहीं दूसरी ओर कुरान और पैगम्बर साहब की जीवनी का भी अध्ययन किया इतना ही नहीं, उन्होंने बाइबिल, गुरूग्रन्थ साहिब, बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा पारसी धर्म–ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। इन सबके अध्ययन से उभरे सार–तत्व ने उन्हें यह अभास कराया कि सब धर्मो में बुनियादी एकता है।

Figure : 00 **References : 14** **Table : 00**

Key Words : गाँधी जी का चिंतन, गाँधी जी का दर्शन

प्रस्तावना: सत्य और अहिंसा की प्रतिमूर्ति महात्मा गाँधी ने धर्म की स जनात्मक शक्ति को स्वीकार किया था। उनका धर्म अत्यन्त व्यापक और उदार था। महात्मा गाँधी ने धर्म को किसी जाति–विशेष का धर्म नहीं माना। वह यह भी कहते थे कि धर्म वह नहीं है, जो संसार की धार्मिक पुस्तकों में वर्णित है। वह कहते थे कि धर्म तो सब देश, जाति तथा सभी सम्प्रदायों और सम्पूर्ण मानव–जाति का है। महात्मा गाँधी का धर्म आत्म–बोध है, आत्म–ज्ञान है। धर्म उनके लिए संसार की नैतिक अनुशासन की व्यवस्था थी। उन्होंने समाज में व्याप्त धर्म के विकृत रूप को देखा और अपने प्रयोगों तथा निष्कर्षों के आधार पर धर्म की पुनः एक व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की। गाँधी जी ने धर्म को जीवन और समाज का आधारभूत तत्व स्वीकार किया और कहा कि इसको निकाल देने से व्यक्ति और समाज दोनों निष्प्राण और शून्य हो जाते हैं।[1]

'धर्म' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के शब्द 'धर्मधध्रे' से हुई है, जिसका अर्थ है–धारण करना, संभालना। जो सबको संभाले और मिलाए रखे वही धर्म है। धर्म हमें कर्तव्य का बोध कराता है। धर्म का विस्तार मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों ही रूपों में होना चाहिए। गाँधी दर्शन में धर्म का अर्थ एक 'सेक्ट' नहीं है, बल्कि यह एक शक्ति है, जो सत्य के आधार पर मानवता के बीच समन्वय स्थापित करती है। वह एकता लाती है और आस्था जाग त करती है। परन्तु यह तभी सम्भव है, जब मानव अपने आपको सम्पूर्ण

समुदाय का एक हिस्सा माने।[२]

गाँधी का धार्मिक द ष्टिकोण–गाँधी दर्शन सभी धर्म मजहबों की बुनियादी एकता पर आधारित है यह गाँधी का सर्वधर्म समभाव है। 'मानवता' का संरक्षण सभी धर्मो एवं मजहबों का बुनियादी सिद्धान्त है सभी धर्म यह उपदेश देते हैं कि दुनिया के सब इंसान भाई–भाई हैं सब इंसान बराबर हैं। न कोई बड़ा है न छोटा। सभी धर्मो ने क्षमा को अपने बुनियादी सिद्धान्तों में सबसे बड़ा दर्जा दिया है। धर्म बुराई का बदला भलाई से देने का मार्ग सुझाते हैं। जहाँ भलाई है, वहाँ प्रेम है। जहाँ सत्य है, वहाँ धर्म है। गाँधी ने जहाँ एक ओर हिन्दू धर्म ग्रन्थों– वेदों, उपनिषदों, पुराणों और गीता आदि का अध्ययन किया वहीं दूसरी ओर कुरान और पैगम्बर साहब की जीवनी का भी अध्ययन किया। इतना ही नहीं, उन्होंने बाइबिल, गुरूग्रन्थ साहिब, बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा परासी धर्म ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। इन सब के अध्ययन से उभरे सार–तत्व ने उन्हें यह आभास कराया कि सब धर्मो में बुनयादी एकता है।[३]

साम्प्रदायिक–सौहार्द्र के पोषक–भारतीय संदर्भ में गाँधी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता को साम्प्रदायिक सद्भाव की दिशा में प्रमुख बिन्दु माना। यदि उनके बीच एकता स्थापित हो जाती है तो अन्य सम्प्रदाय के लोग इसकी एकता को और सुद ढ़ तथा प्रगाढ़ करेंगे। दक्षिण अफ्रीका में गाँधी एक मुस्लिम बंधु के विधिवक्ता के रूप में गए थे। वहाँ बसे भारतीय एवं एशियाई लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए गाँध ी ने आंदोलन शुरू किया। वहीं उन्होंने 'सत्याग्रह' का अपना प्रारम्भिक प्रयोग किया। अधिकारों की यह लड़ाई न तो हिन्दुओं की थी, न ही मुसलमानों की बल्कि भारतीयों की थी। उन्होंने सभी सम्प्रदाय के लोगों को आपसी मतभेदों को भुलाकर एकजुट होकर संघर्ष करने को कहा। गाँधी जी लिखते हैं कि 'मै बीस वर्षो तक मुसलमान बन्धुओं के बीच रहा। उन्होंने मुझसे अपने परिवार के सदस्य की तरह व्यवहार किया और अपने पत्नी एवं बहनों से कहा कि मुझसे पर्दा करने की जरूरत नहीं है।[४]

दक्षिण अफ्रीका के प्रवास के दौरान गाँधी जी ने वहाँ न सिर्फ हिन्दू बल्कि मुसलमान, सिख, पारसी के साथ–साथ विश्व के सभी धर्मो के सच्चे अनुयायियों के संपर्क में आए। अनुभवों ने उन्हें यह भी सिखाया कि हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक सौहार्द नहीं है। यह सिर्फ ऊपरी सतह तक सीमित है। गाँधी जी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए प्रत्येक अवसर का सदुपयोग किया। भारत में आने के पश्चात भी गाँधी जी के दर्शन में 'साम्प्रदायिक एकता' एवं 'सत्याग्रह' प्रमुख तत्व है। 'मै दो बातों के लिए अपना जीवन समर्पित करता हूँ–हिन्दुओं एवं मुसलमानों के बीच स्थायी एकता और सत्याग्रह। सत्याग्रह के प्रति ज्यादा, क्योंकि इसका दायरा विस्त त है। सत्याग्रह के पालन से एकता स्वयं आ जाएगी।[५] सत्य यह है कि सभी धर्मो का सार एक है। मानवता सत्य का पालन सहिष्णुता से होता है न कि उग्रता से।

भारत में सदियों से हिन्दू एवं मुसलमान साथ–साथ रहे हैं। गाँधी जी कहते हैं, 'मेरा सम्पूर्ण भारत का अनुभव यह बताता है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों एक साथ शांतिपूर्वक रहना जानते हैं। मैं यह मानने के लिए तैयार नही हूँ कि लोगों ने कई पीढ़ियों तक साथ रहने के अनुभव को अलविदा कह दिया है।[६] 'भारतीय संस्कृति उन विभिन्न संस्कृतियों का संश्लेषण है जो इस देश में रच–बस गई है और जिन्होंने भारतीय जीवन को प्रभावित किया है तथा स्वयं इस धरती की आत्मा से प्रभावित हुई है। स्वभावतया इस संश्लेषण का स्वरूप स्वदेशी है जिसमें हर संस्कृति के लिए उचित स्थान सुनिश्चित है।[७]

यह न तो हिन्दू है, न ही इस्लामी है। प्रत्येक भारतीय का यह दायित्व है कि वह इस भारतीय

संसेंति की रक्षा करे, इसकी कद्र करे। 'हिन्दू–मुस्लिम एकता का अर्थ केवल हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच एकता नहीं है, बल्कि उन सब लोगों के बीच एकता है जो भारत को अपना घर समझते है, उनका धर्म चाहे जो भी हो। राष्ट्रीय जीवन में एकता के लिए प्रेम आवश्यक है। प्रेम धर्म का आधार भी है। प्रेम के आधार पर मैत्री होनी चाहिए। यदि एक सम्प्रदाय भी प्रेम के मार्ग का अनुसरण करेगा। तो राष्ट्रीय एकता कायम रहेगी। इसलिए हिन्दू–मुस्लिम एकता आवश्यक है। इसका अर्थ यह है कि हमारा लक्ष्य समान हो। हम एक–दूसरे के सुख–दुख के साथी बनें। हम सहिष्णुता की भावना के साथ एक दूसरे को सहयोग करें। गाँधी जी के मन मे हिन्दुओं के लिए जितना प्रेम था उतना ही प्रेम मुसलमानों के लिए भी था। उन्होंने कहा है–मैं जानता हूँ कि यदि मेरे जीवनकाल में नहीं तो मेरी म त्यु के बाद हिन्दू और मुसलमान, दोनों इसके साक्षी होंगे कि मैने साम्प्रदायिक शांति की लालसा कभी नही छोड़ी।[८]

राजनीति और धर्म -महात्मा गाँधी के विचारों की यह सबसे महत्वपूर्ण देन है कि उन्होने राजनीति और धर्म के बीच अटूट सम्बंध की स्थापना की। गाँधी जी का आग्रह था कि राजनीति का आधार धर्म है। उन्होंने उपयोगिता के इस प्रसिद्ध सिद्धान्त को कभी स्वीकार नही किया कि धर्म व्यक्ति का निजी मामला है और इसलिए उसकी राजनीति से उसका कोई सम्बंध नहीं होना चाहिए।[९]

गाँधी जी ने राजनीति को ऊपर उठाकर निःस्वार्थ लोक सेवा तथा नैतिकता के स्तर पर रखा। महात्मा गाँधी एक महान कर्मयोगी थे जो राजनीति मे धर्म का समावेश करके नैतिकता के उस दोहरे मापदण्ड को मिटाना चाहते थे, जो ऐसे शब्दों से व्यक्त होता है कि ''राजनीति राजनीति है'' और ''व्यापार व्यापार है'' उनका विश्वास था कि सच्चा धर्म कर्तव्य प्रेरक होता है और राजनीतिक क्रियाशीलता इससे सम्मिलित है। राजनीति देश धर्म है जिससे अलग होकर व्यक्ति आत्मघात करता है। हमें इस देशधर्म है जिससे अलग होकर व्यक्ति आत्मघात करता है, हमें इस देशधर्म को दूषित नहीं करना चाहिए। गाँधी जी की मान्यता थी कि धर्म के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित है कि ''मानव–प्रव त्तियों का सार सप्तक एक अविभाज्य वस्तु है आप सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और विशुद्ध धर्म काम के अलग–अलग खाने नहीं बना सकते।''[१०]

गाँधी जी पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने 'धर्म' को पंथ और सम्प्रदाय की संकीर्ण परिभाषा से बाहर निकाला। वे सभी को इस बात का स्मरण कराते थे कि किसी के भी धर्म–ग्रन्थ में दूसरे अन्य धर्म की निन्दा नहीं की गई है। वे चाहते थे कि सभी लोग अहिंसा का पालन करते हुए धार्मिक प्रव त्ति रखें। उनकी इस धर्म सम्बन्धी व्याख्या पर अमल कर धार्मिक विद्वेष और साम्प्रदायिकता जैसी समस्या से बचा जा सकता है। अतः धर्मनिरपेक्षता का सबसे बड़ा उदाहरण हमें गाँधी जी में ही देखने को मिलता है। गाँधी जी ही पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने धर्म और राजनीति का समन्वय किया। वह धर्मविहीन राजनीति को नहीं मानते थे। उनका कहना था कि हमें दुश्मन का भी कठिनाई के समय राजनीतिक लाभ नहीं उठाना चाहिए।

धर्म और नैतिकता–महात्मा गाँधी मूल रूप से धार्मिक पुरूष थे। उनके जीवन का अंतिम लक्ष्य ईश्वर का साक्षात्कार करना था। वे धर्म और नैतिकता मे कोई भेद नही मानते थे। उनके अनुसार दोनो मूलतः एक ही थे। उनके धर्म को निम्नलिखित बातों के प्रकाश मे अच्छी तरह से समझा जा सकता है–

१. प्रारम्भ से ही सत्य के प्रेमी -महात्मा गाँधी प्रारम्भ से ही सत्यप्रेमी थे। उनके बाल्यावस्था की घटनाओं के विवेचन से यह तथ्य सामने आता है कि वे बचपन से ही सत्य पर अडिग रहे। सत्यवादी राजा

हरिश्चन्द्र का नाटक देखने के पश्चात वे सत्य के प्रति अटूट आस्थावान बन गए थे।

२. उच्च आदर्शो का प्रभाव -उनके उच्च आदर्शो के निर्माण मे उनके जीवन पर जिन पुस्तकों का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा, वे अधिकतर धार्मिक पुस्तकें थीं अथवा उच्च नैतिक आदर्श एवं दर्शन से सम्बन्धित थीं, जैसे – रामायण, मनुस्म ति, गीता, बाइबिल, कुरान आदि तथा साथ ही थोरो, रस्किन, इमर्सन व टालस्टाय आदि की पुस्तकें जिनमे नैतिकता के अमूल्य आदर्श दिये हुए थे।

३. धर्म के मूल मे सत्य और अहिंसा -महात्मा गाँधी ने जिन नैतिक आदर्शो की पुस्तकें का अध्ययन किया, उनका महात्मा गाँधी पर एक प्रभाव यह पड़ा था कि उनकी धर्म की अवधारणा किसी एक धर्म मे न बंधकर सभी धर्मो से मिलने वाले समान नैतिक गुणों से परिपूर्ण हो गई। उनके लिए धर्म और नैतिक नियम एक ही अर्थ वाले हो गये। सत्य, अहिंसा तथा साधनों की पवित्रता उनके धार्मिक विचारों के मूल में थी।

४. सभी धर्मो का समान आदर -महात्मा गाँधी ''सर्वधर्म समभाव'' में विश्वास करते थे तथा वे सभी धर्मो का समान आदर करते थे। सर्वधर्म समभाव का नैतिक नियम उनके साबरमती आश्रम के मूल नियमों में से एक महत्वपूर्ण नियम था। उनके राम दशरथ के पुत्र न होकर उनके विचारो में ईश्वर के अमूर्त रूप थे।

५. धर्म-परिवर्तन का स्थान न होना -महात्मा गाँधी की धर्म के विषय मे जिस प्रकार की अवधारणा थी, उसमे धर्म परिवर्तन के लिए स्थान नहीं था। उनकी मान्यता थी कि सभी धर्म समान हैं, सभी धर्मो का लक्ष्य एक है, अन्तर केवल नाम का है।

६. धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों का आदर -महात्मा गाँधी के साबरमती आश्रम के आश्रमवासियों के लिए महत्वपूर्ण नैतिक नियम इस प्रकार के थे–सत्य, अहिंसा, साधनों की पवित्रता, ब्रह्मचर्य, रसना पर नियन्त्रण, अभय, अस्तेय, अपरिग्रह, स्वदेशी, अछूतोद्वार एवं सभी धर्मो में इन बातो में से किसी भी बात को गलत माना जाता है, तो उन्हें वह धर्म उस रूप में मान्य नहीं है।

७. प्रार्थना में विश्वास - महात्मा गाँधी का प्रार्थना में बहुत विश्वास था वे प्रार्थना को आत्मा का भोजन मानते थे। उनकी प्रार्थना सभा मे विभिन्न धर्मो के महान ग्रन्थों के महत्वपूर्ण अंश पढ़े जाते थे। उनकी प्रार्थना सभा मे विभिन्न धर्मो के महान ग्रन्थों के महत्वपूर्ण अंश पढ़े जाते थे। उनकी प्रार्थना सभा मे सामाजिक बुराईयों के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित किया जाता था।

८. अन्तः प्रज्ञा का महत्व -धर्म के विषय मे महात्मा गाँधी की एक विशेष बात यह थी कि वे अन्तः प्रज्ञा को अत्याधिक महत्व देते थे।

९. मानवीय सेवा ही धर्म - महात्मा गाँधी ने धर्म को मानव जीवन में एक सक्रिय और तीव्र शक्ति बना दिया। उन्होंने मानव जीवन को धर्म कहा। उनके अनुसार सबसे बड़ा धार्मिक व्यक्ति वह है जो मानव सेवा मे सबसे आगे है। महात्मा गाँधी का कहना था कि मनुष्य और ईश्वर मे सम्बंध स्थापित करने वाली सबसे बड़ी वस्तु जनसेवा है उनके अनुसार इस धर्म मे सच्चा रूप संसार के समस्त महान धर्मो मे प्राप्त होता है।

१०. धार्मिक जीवन का अर्थ नैतिक जीवन - महात्मा गाँधी के अनुसार सच्चे धार्मिक जीवन का अर्थ है मन्दिर मे जाना, प्रार्थना करना, दान देना, धर्म की पुस्तकों को पढ़ना, कीर्तन तथा धर्म–व्याख्यानों को सुनना आदि नहीं, उनके अनुसार ये बातें धर्म के बाहर का रूप मंत्र है, जिनका पालन घोर अन्यायी और अधार्मिक पुरूष भी कर सकते हैं। सच्चा धर्म वह है, जो जीवन को सक्रिय बनाये तथा मानव जीवन में

सुख का संचार कर दे। उनके अनुसार धर्म का सच्चा रूप नैतिक सिद्धान्तों का जीवन में हर समय पालन करने में है।[११]

धर्म का निरपेक्षीकरण -गाँधी धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रवाद एवं देश की एकता के समर्थक रहे हैं। सहिष्णुता एवं सभी धर्मो का एक समान महत्व भारतीयता की कुंजी है। सत्याग्रह एवं अहिंसा के मार्ग से अलग हटकर सभी साम्प्रदायिक ताकतों, चाहे वे हिन्दूवादी हों या इस्लाम के समर्थक, ने गाँधी जी का विरोध किया है। गाँधी जी की सहिष्णुता, प्रेम और अहिंसा का मार्ग धार्मिक राष्ट्रवाद की भावना को शिथिल करता है। धार्मिक राष्ट्रवाद घ णा एवं हिंसा पर फलता–फूलता है। सभी धर्मो का सार यानी सत्य को प्राप्त करने की पूँजी सत्याग्रह एवं अहिंसा का मार्ग है। यही कारण है कि गाँधी जी ने बदले की भावना की जगह शांति एवं दया के मार्ग पर चलने का सुझाव दिया। उनका कहना था, ''बदले की भावना आदम के समय से प्रयोग की जा रही है और विफल होती रही है। इसके जहरीले प्रभाव को हम झेल रहे हैं। हिन्दुओं को मन्दिर के बदले में मस्जिद नहीं तोड़नी चाहिए ये दास्ता है, "यदि एक हजार मन्दिर को भी तोड़कर मिट्टी में मिला दिया जाए जो भी एक भी मस्जिद को मैं हाथ नहीं लगाऊँगा और इस तरह से अपने विश्वास की सर्वोच्चता को उन्माद के विष से ऊपर रखने की उम्मीद करूँगा'' ये गाँधी जी की नैतिकता का बल है।[१२]

गाँधी जी के अनुसार धार्मिक और आध्यात्मिक विचार के लोगों के लिए राजनीति में निश्चित रूप से सफलता मिल सकती है। गोपाल कृष्ण गोखले के चित्र का अनावरण करते हुए सन १९१५ ई० में बंगलौर में उन्होंने कहा था कि देश–भक्ति का दावा करने वाले प्रत्येक भारतीय का स्वप्न भाषा द्वारा देश का गौरव बढ़ाने की अपेक्षा देश के राजनीतिक जीवन और संस्थाओं का आध्यात्मीकरण करना होना चाहिए। अल्बर्ट आइंस्टीन ने सत्य ही कहा था कि–''महात्मा गाँधी जी ने सिद्ध कर दिया है कि केवल प्रचलित राजनीतिक चालबाजियों और धोखाधड़ियों के मक्कारी भरे खेल के द्वारा ही नहीं, बल्कि जीवन के नैतिकतापूर्ण श्रेष्ठतर आचरण के प्रबल उदाहरण द्वारा मनुष्यों का एक बलशाली अनुगामी दल एकत्र किया जा सकता है।''

लुई फिशर के अनुसार–''महात्मा गाँधी जी ने सिद्ध कर दिया कि ईसा तथा ईसाई पादरियों और बुद्ध का तथा कुछ ईरानी पैगम्बरों और यूनानी ज्ञानियों का आध्यात्मक आधुनिक समय में तथा आधुनिक राजनीति पर प्रयुक्त हो सकता है।''[१३]

सर्वधर्म समभाव -'सर्वधर्म समभाव' से तात्पर्य यह है कि सभी धर्मों को समान माना जाये सच्चे मन से। इतिहास इस बात का साक्षी है कि धर्म के नाम पर इतने नरसंहार हुए हैं, जितने किसी और नाम पर नहीं। आश्चर्य तो यह है कि सभी धर्म वाले यह मानते हैं, कि संसार का बनाने वाला कोई एक है जिसके सभी मनुष्य बेटे हैं। ईसाई उसे 'गॉड' कहते हैं, मुस्लिम 'खुदा' और हिन्दू 'ईश्वर। पर एक बात समझ में नहीं आती है कि यदि सचमुच ही संसार का बनाने वाला, कोई एक ही प्राणी है और वही सबसे बड़ा, सबसे शक्तिशाली और संसार का नियन्ता है तो उसने अपनी बात कुछ अरबी में, कुछ को संस्कृत में और कुछ को अंग्रेजी में कह कर यह झगड़ा क्यों खड़ा किया कि उसके बेटे उसी के नाम पर खून–खराबा करते हैं? इससे इतना तो सिद्ध होता है कि धर्मो के सारे भेद मनुष्य ने स्वयं बनाये हैं। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक धर्म के चलाने वालों ने जहाँ तक उनकी समझ ने साथ दिया, ईश्वर तक पहुँचने के लिए कुछ रास्ते बनाये। चूँकि ये लोग भिन्न–भिन्न स्थानों पर और विभिन्न कालो में हुए, इसलिए उनके रास्तों मे

भी फर्क आ गया। अतः यह कहना कि कौन–सा धर्म सही है और कौन–सा गलत। सच्चाई तो इसमें है कि सभी धर्मों को बराबर मान कर उनमें जो भी अच्छी बातें हों, ग्रहण कर ली जाएँ।

गाँधी जी ने 'हिन्द स्वराज्य' नामक पुस्तक में लिखा है कि "सभी धर्म एक ही जगह पर पहुँचने के अलग–अलग रास्ते हैं। अगर हम एक ही जगह पर पहुँच जाते हैं तो अलग–अलग रास्ते अपनाने मे हर्ज ही क्या है? सच पूछिए तो इस संसार में उतने ही धर्म हैं जितने मनुष्य।" हिन्दू लोगों में ही नहीं सर्वत्र संसार में गीता को एक अत्यन्त महत्व की दार्शनिक पुस्तक माना गया है। इसमें भगवान ष्ण मानते हैं–"जिस तरह सभी नदियों का जल अन्त में सागर में जा मिलता है उसी प्रकार किसी भी रूप में भगवान की पूजा मुझे ही मिलती है।"[१४]

निष्कर्ष - भारतीय संदर्भ में गाँधी जी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता को साम्प्रदायिक सद्भाव की दिशा में प्रमुख बिन्दु माना। यदि उनके बीच एकता स्थापित हो जाती है, तो अन्य सम्प्रदाय के लोग इसकी एकता को और सुद ढ़ एवं प्रगाढ़ करेंगे।

महात्मा गाँधी का धर्म रूढ़िवादी न होकर नैतिकता के उन नियमों पर आधारित है, जिनका पालन करके ही हम सच्चे अर्थों में धार्मिक कहला सकते हैं। आज संसार में लाखों–करोड़ों लोग ऐसे मिलेंगे, जो अपने आपको धार्मिक कहते हैं, वाह्य रूप से धर्म का पालन करते दिखाई देते हैं, पर यदि उनके कार्यो को महात्मा गाँधी जी की धर्म की अवधारणा की कसौटी पर नैतिक कार्यो के आधार पर कसा जाए तो वे पूर्ण रूप से अधार्मिक सिद्ध होंगे। महात्मा गाँधी के लिए धर्म और नैतिकता में कोई भेद नहीं था। महात्मा गाँधी कहा करते थे कि दुनिया को देने के लिए कोई नई चीज मेरे पास है ही नहीं, सत्य और अहिंसा तो न जाने कबसे खड़े हुए पहाड़ों की तरह प्राचीन हैं।

गाँधी जी के अनुसार, "सभी धर्मों को साम्प्रदायिकता के विकराल सर्प ने अपनी कुण्डली में लपेट लिया है। परिणामस्वरूप, सभी धर्म अपने आपको दूसरे धर्मों से श्रेष्ठ बताने लगे हैं। यही साम्प्रदायिक समस्या की जड़ है। सभी धर्म–मजहबों के मानने वालों को चाहिए कि वे राष्ट्रहित में मिल जुलकर रहें और आपस में पवित्र हृदय से मित्रता करें।" उन्होंने यह भी कहा, "मैं एक ऐसे भारत के लिए काम करूँगा, जिसमें गरीब से गरीब लोग भी यह महसूस करेंगे कि यह उनका देश है और उनके निर्माण में उनकी आवाज भी प्रभावकारी है। ऐसा भारत, जिसमें ऊँच–नीच की भावना का कोई स्थान नहीं होगा और जिसमें सभी सम्प्रदायों के लोग प्रेमपूर्वक रहेंगे।'

संदर्भ

१. त्रिपाठी, शम्भूलाल; गाँधी–धर्म और समाज, प० २२.
२. गुम्मादी, वीरराजू; गाँधीज फिलॉसाफी, इट्स रिलेवेंस टूडे, नई दिल्ली, डिसेंट वीक्स, १६६६, प० ३४.
३. वही, प० ३४.
४. हरिजन, २४ नवम्बर, १६४६, प० ४१०.
५. यंग इण्डिया, १४ मई, १६१६, प० १३८.
६. हरिजन, १६ मार्च, १६४७, प० ६२.
७. प्रभु, आर०के०; तथा राव, यू०आर०; महात्मा गाँधी के विचार, नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, १६६४, प० ४१६.
८. यंग इण्डिया, १४ मई, १६१६, प० १४८.
६. रोला, रोम्यां महात्मा गाँधी, प० ६८.
१०. त्रिपाठी, शम्भूलाल; उपर्युक्त, प० २७–२८.
११. नेमा०, डा०जी०पी०; सिंह, प्रताप; गाँधी जी का दर्शन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, प० ६३–६४.
१२. असगर, इंजीनियर अली; 'गाँधीज अप्रोच टू कम्यूनल प्राब्लम्स', गाँधी मार्ग, जिल्द २५, नं० ३, अक्टूबर–दिसम्बर २००३.
१३. नेमा०, डा० जी०पी०; प्रताप सिंह, उपर्युक्त, प० ६५.
१४. वही, प० ६७–६८.

46